रूपकुंड झील: जलवायु परविर्तन के कारण संकट में

चर्चा में क्यों?

हाल ही में उत्तराखंड में प्रसिद्ध **रूपकुंड झील**, जो अपने सदियों पुराने मानव कंकालों के लिये जानी जाती है, सिकुड़ रही है क्योंकि **जलवायु परिवर्तन** इसके आकार और **पारिस्थितिकी तंत्र** को प्रभावित कर रहा है।

मुख्य बिंदु

- **रूपकुंड झील:**
  - माना जाता है कि **रूपकुंड** में पाए गए **कंकाल 9वीं शताब्दी** के हैं।
  - **आनुवंशिक अध्ययनों द्वारा** स्पष्ट होता है कि ये व्यक्ति विविध समूहों से आये थे, जिनमें **भूमध्यसागरीय वंश** भी शामिल था।
  - मत बताते हैं कि वे या तो तीर्थयात्री या व्यापारी थे, जो अचानक **ओलावृष्टि** के कारण मारे गए और संभवतः उनकी मृत्यु का कारण भारी ओलावृष्टि थी।
- **रूपकुंड के कंकालों पर वैज्ञानिक अध्ययन:**
  - आधुनिक शोध से अनेक जातियों के **DNA** के निशान मिले हैं, जिनमें से कुछ **19 वीं** शताब्दी के भी हैं, जिससे पता चलता है कि रूपकुंड पर लंबे समय से लोग आते रहे होंगे।
  - शोधकर्त्ताओं का मानना है कि **रूपकुंड** कभी एक पवित्र स्थल था और तीर्थयात्री संभवतः लंबी दूरी की यात्रा करके इस एकांत, **ऊँचाई पर स्थित झील** में अपनी मृत्यु का सामना करते थे।
- **जलवायु परिवर्तन का पर्यावरणीय प्रभाव:**
  - ग्लेशियर के आकार में कमी, **मानसून के पैटर्न** में परिवर्तन और **अनियमित बर्फबारी के कारण रूपकुंड** में जल स्तर में कमी आई है।
  - तापमान और मौसम में परिवर्तन **क्षेत्र के वनस्पतियों एवं जीव-जंतुओं को प्रभावित कर रहे हैं,** जिससे झील के आसपास पारिस्थितिक असंतुलन उत्पन्न हो रहा है।
- **पर्यटन एवं संरक्षण चुनौतियाँ:**
  - रूपकुंड का छोटा होता आकार और पर्यावरणीय क्षरण, झील के अद्वितीय इतिहास तथा पारिस्थितिक महत्त्व को संरक्षित करना कठिन बना रहे हैं।
  - इस बात को लेकर चिंताएँ बढ़ रही हैं कि अनियंत्रित पर्यटन व अपर्याप्त संरक्षण प्रयासों के कारण जलवायु परिवर्तन से होने वाली क्षति और बढ़ सकती है।

//

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/roopkund-lake-in-peril-due-to-climate-change